Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 18thJuly 2018, Revised on 19th July 2018; Accepted28th July 2018

ARTICLE

गुजरात का लक्ष्य : मिशन–विद्या

* डॉ. नरेंद्रकुमार पाल
(सहायक शिक्षक, भरकुंडा प्रायमरी स्कूल, कठलाल, खेड़ा)
Email - drnavinsir@yahoo.in, 9924181920

Key words: *मिशन–विद्या, गुजरात आदि.*

लेख–संक्षेप

प्रस्तुत लेख में गुजरात राज्य में वर्तमान में चल रहे मिशन–विद्या कार्यक्रम के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। मिशन–विद्या कार्यक्रम क्या है? और इस मिशन की आवश्यकता और प्रक्रिया की जरुरत क्यों है? मिशन–विद्या कार्यक्रम का भविष्य और परिणाम के बारे में चर्चा की गई है। साथ में मिशन–विद्या कार्यक्रम में कुछ कमियां रह गई है, जिनके बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई है स प्रस्तुत लेख मिशन–विद्या कार्यक्रम, जो गुजरात के सरकारी प्रायमरी स्कूल (६ से ८) तक सिमित है और इसमें किये गए हकारात्मक प्रयास के बारे में सभी पहलुओं पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना :

गुजरात राज्य में वर्तमान समय में शिक्षा को लेके चल रहा मिशन (लक्ष्य) काफी चर्चा में है। सम्पूर्ण गुजरात में पिछले कुछ दशकों में प्रायमरी स्तरमें शिक्षा की गुणवत्ता में काफी गिरावट हुई है। जिसका असर माध्यमिक स्तर के परिणाम पे देखने को मिला स माध्यमिक स्तर के परिणाम को ध्यान में रखते हुए उनकी समीक्षा हुई; जिससे पता लगा की माध्यमिक स्तर पर प्रवेश लेनेवाले काफी बच्चे लिखना, पढ़ना और गिनती करने में बेहद कमजोर पाए गए थे। इन्ही वजह से माध्यमिक कक्षा के परिणाम में काफी गिरावट देखने को मिली।

इस समस्या को दूर करने के लिए गुजरात के शिक्षा विभागने मिशन–विद्या नाम से एक मुहीम शुरू की है। इस मुहीम के तहत गुजरात के सभी जिलों की सभी सरकारी प्रायमरी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा ६ से ८ तक के बच्चो को कक्षा समय में बढ़ोतरी करके उन्हें लिखना, पढ़ना और गिनना सिखाया जाएगा स इन प्रयासों से उच्च प्रायमरी कक्षा के कमजोर बच्चो की कमियाँ दूर की जा सकेगी और माध्यमिकमें आने तक बच्चोमें बुनियादी ज्ञान से अवगत किया जा सकेगा।

मिशन–विद्या का उद्येश्य :

मिशन–विद्या अभियान सम्पूर्ण गुजरात राज्य के सभी सरकारी प्रायमरी स्कूलों में कक्षा ६ से ८ तक के बच्चो के लिए २६ जुलाई २०१८ से शुरू करके ३१ अगस्त २०१८ तक की समय सीमा तय किया जा रहा है। इस मिशनके तहत लिखने, पढ़ने और गिनने में कमजोर बच्चो को प्रतिदिन ३ घंटे तक उसी कक्षा में ६ से ८ कक्षा के शिक्षकों के द्वारा ज्ञान दिया दिया जा रहा है और सुचारु तरह से कार्य चल रहा है। इस मिशन–विद्या के अंतर्गत स्कूलों का समय में १ घंटे की बढ़ोतरी भी की गई है स २६ जुलाई से ३१ अगस्त २०१८ तक प्रतिदिन स्कूल समय के दौरान २ घंटे और १ घंटा स्कूल समय के बाद कार्य करना है। प्रतिदिन के ३ घंटो को ३ कार्यो के लिए विभाजित किया गया है स १ घंटा लिखने के

कौशल्य में सुधर के लिए, १ घंटा पढ़ने के कौशल्य के सुधर के लिए और १ घंटा गिनती के कौशल्य के सुधार के लिए विभाजित किया गया है ।

मिशन–विद्या का उद्येश कक्षा ६ से ८ के बच्चो में उन बच्चो को तैयार करना है की जिन बच्चो ने कक्षा १ से ५ तक की शिक्षा के दौरान लिखना, पढ़ना और गिनती जैसे मूलभूत ज्ञान को ग्रहण नहीं किया । ६ से ८वीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे आगे भविष्य मे कक्षा–प्रवेश करने से इन बच्चो को माध्यमिक स्तर के अपने परिणाम में सुधार का मौका मिलेगा; और यही मिशन–विद्या का उद्येश है की जो बच्चे ६ से ८ तक की कक्षामें आ गए है उन्हें लिखना, पढ़ना और गिनना आना ही चाहिए ।

मिशन–विद्या की प्रक्रिया :

मिशन–विद्या की प्रक्रिया प्रायमरी स्तर के कक्षा ६ से ८ तक के बच्चो के लिए लागु की गई प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया के तहत कक्षा ६ से ८ में पढ़नेवाले विद्यार्थियों में से उन बच्चो को अलग किया जाता है जो बच्चो सामान्य प्रादेशिक भाषा (गुजराती) पढ़ नहीं सकते या फिर गुजराती भाषा सुनकर लिख नहीं सकते है । साथ में उन बच्चो को भी अलग किया जाता है जो कक्षा ६ से ८ तक पहोच गए है; लेकिन उन्हें सामान्य गिनती करनी नहीं आती स गिनती के अंतर्गत (जोड़ना (+), घटाना (–), गुणा करना (×), भाग करना (झ)) जैसी सामान्य गिनती नहीं कर सकता है । इन बच्चो को प्रतिदिन ३ घंटे तक उसी स्कूल में कार्य करने वाले उसी कक्षा के शिक्षकों द्वारा सुधारणात्मक कार्य करना पड़ता है । जिन विद्यार्थियों को लिखने, पढ़ने और गिनिती करनी नहीं आती उन बच्चो के लिए "प्रिय" शब्द का प्रयोग करना इस मिशन–विद्या में सूचित किया गया है । मिशन–विद्या के अंतर्गत विद्यार्थियों को ग्रुप में रखने के लिए "X१" और "X२" संज्ञा दी गई है । जिसकी सूचि उसी कक्षा के शिक्षक के द्वारा तैयार की जानी है । मिशन–विद्या कार्यक्रम के दौरान हर १५ दिन के बाद इन कमजोर (प्रिय) विद्यार्थियों के लिखने, पढ़ने और गिनती के कौशल्य में कितना सुधार हुआ है उसकी जानकारी प्राप्त करके आंकड़ों का एकत्रीकरण किया जाएगा ।

मिशन–विद्या की आवश्यकता :

मिशन–विद्या की आवशयकता गुजरात राज्य के प्राथमिक स्तर पे बहोत जरुरी हो गई है । गुजरात राज्य के सरकारी स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चे ज्ञान प्राप्ति के सन्दर्भ में प्राइवेट स्कूलों के बच्चो की तुलना में काफी पिछड़े हुए प्राप्त हुए है । सामान्य गुजरात में रहनेवाले परिवारों का मानना है की सरकारी स्कूलों में बच्चे पढ़ाई के मामलो में पिछड़ जाते है और जब की प्राइवेट स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चे काफी ज्ञान प्राप्त करके कौशल्य युक्त होते है । इसी सोच की वजह से गुजरात में सरकारी स्कूलों में बच्चो का प्रवेश करवाने की बजाय अभिभावक अपने बच्चो को प्राइवेट स्कूल में काफी शुल्क (फीस) देकर भी एडमिशन करवाते है । ज्यादातर अभिभावकों की यही सोच है की सरकारी स्कूलों में बच्चो का ज्ञानात्मक विकास सही नहीं होता, या फिर जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर है या गरीब परिवार के बच्चो के लिए ही सरकारी स्कूल बने है । कई बार अभिभावकों की सोच यह भी है की मुफ्त शिक्षा कभी गुणवत्ता युक्त नहीं हो सकती । इन सभी सोच को बदलने के लिए और सरकारी स्कूलों में घटते विद्यार्थियों की संख्या में सुधार हेतु शिक्षा विभाग को जरुरी बदलाव की आवशयकता महसूस हुई है । और इस आवशयकता को ध्यान में रखते हुए मिशन–विद्या का अभियान शुरू किया गया है ।

मिशन–विद्या का भविष्य और संभावित परिणाम :

प्रत्येक कार्य एक अच्छे संकल्प और सही परिणाम के प्रयास को ध्यान में रखकर शुरू किया जाता है । मिशन–विद्या भी एक हकारात्मक अभिगम और श्रेष्ठ संकल्प और सुधार के लिए उठाया गया गुजरात सरकार का बहेतरीन प्रयास है ।

मिशन–विद्या का सही दिशा में किया गया प्रयास निसंदेह ही अच्छा परिणाम देगा । साथ ही यह मिशन–विद्या उन कमजोर विद्यार्थियों के लिए संजीवनी की तरह कार्य करेगा जिनमे पढ़ाई को लेके उत्साह है पर पिछले वर्षो में उनकी कमियों को किसी ने दूर करने का प्रयास नहीं किया था । आनेवाले कक्षागत पढ़ाई और माध्यमिक स्तर की शिक्षा में बाधित होने वाली कमियाँ इस मिशन–विद्या से दूर हो सकेगी और बहेतर शिक्षा प्राप्त करके कौशल्यवान बन सकेंगे । मिशन–विद्या का परिणाम कक्षा ६ से ८ तक के बच्चो के लिए श्रेष्ठ रहेगा और इस लक्ष्य से कमजोर विद्यार्थियों के शिक्षा विस्तार में भी हकारात्मक परिणाम मिलने की संभावनाए है ।

मिशन–विद्या की कमियाँ :

मिशन–विद्या एक अच्छा कदम है और सही प्रयास है कि कमजोर विद्यार्थियों को ज्ञान के पथ पर अग्रसर किया जा सके । लेकिन इस मिशन को शुरू करने से पहले पूर्व–अभ्यास और चिंतन की कमी साफ़ तौर पर नजर आ रही है । मिशन–विद्या सरकारी स्कूलों के कक्षा ६ से ८ तक के विद्यार्थियों पर लागू किया गया है, लेकिन जमीनी स्तर पर यह मिशन की आवशयकता स्कूल के शुरूआती स्तर पर करनी बेहद आवशयक है जब स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के लिए अभिभावक अपने बच्चो को स्कूल में एडमिशन दिलवाते है तब शुरुआती शिक्षा में कक्षा १ से ५ तक बच्चो को लिखना, पढ़ना और गिनती करना सिखाया जाता है । लेकिन इसी स्तर पर बच्चो की कमी का पता लगाके तुरंत ही दूर कर दिया जाए तो विद्यार्थियों का समय आगे चलके व्यर्थ नहीं होगा । साथ ही कक्षा १ से ५ तक के शिक्षक बच्चो को जमीनी स्तर पर यह कार्य अच्छे से करके हकारात्मक परिणाम प्राप्त कर सकते है । मिशन–विद्या सिर्फ कक्षा १ से ५ तक के लिए सिमित करनी चाहिए जिनसे शुरुआती शिक्षा प्राप्ति के समय ही विद्यार्थियों की इन सब कमियाँ को दूर किया जा सकता है ।

अधिकतर सरकारी स्कूलों में प्रायमरी स्कूलों में कक्षा १ से ५ में शिक्षक और अभिभावको की वजह से भी विद्यार्थियों में लिखना, पढ़ने और गिनने की क्षमता की विकास नहीं हो पाता । शिक्षक कक्षा १ से ५ तक आपने कार्य ठीक से नहीं करते तभी यह परिस्तिति का निर्माण हुआ है । साथ ही अभिभावक भी अपने बच्चोकी शिक्षा में रूचि नहीं लेते जिसकी वजह से बच्चे घर में स्कूल में किये कार्य की प्रेक्टिस नहीं करते । कई बार शिक्षा की नीतियों का निर्धारण करते हुए भविष्यका विचार नहीं करने की वजह से शिक्षा का स्तर गिरा है । स्कूल में कक्षा १ से ८ तक बच्चो को फ़ैल करने के नियम को दूर किया गया है, जिसकी वजह से भी बच्चे रेगुलर स्कूल नहीं आते और उन्हें फ़ैल होने का डर भी मन से निकाल दिया है; जिस के असर से विद्यार्थियों में शिक्षा का महत्व भी काम हो गया है और गंभीर भी नहीं है । कई बार विद्यार्थियों को लिखना, पढ़ना और सामान्य गिनती तक नहि आती और फिर भी विद्यार्थी कक्षा १ से ५ तक पास करके कक्षा ६ में आ जाते है । और ६ से ८ तक की शिक्षा ग्रान करते वक़्त उन्हें लिखने, पढ़ने और गिनने की कमी के चलते शिक्षा की सही समज, उपयोग और तर्क नहीं कर सकते । इन सभी कमजोरीयों की वजह से शिक्षा प्रभावित होती है स कक्षा ६ से ८ तक के तेजस्वी विद्यार्थी इस मिशन–विद्या के चलते उनकी शिक्षा भी प्रभावित होती है और सभी शिक्षक कमजोर विद्यार्थियों के पीछे अपना समय व्यतीत करने की वजह से तेजस्वी विद्यार्थियों के प्रति पूरा ध्यान नहीं दिया जा सकता ।

निष्कर्ष :

मिशन–विद्या एक ऐसा प्रयास है जो निश्चित ही सही परिणाम दे सकता है । लेकिन इस मिशन को जिस कक्षा से शुरू करना चाहिए उस पर दुबारा सोचने की आवशयक्ता है । मिशन की समय सीमा भी कुछ समय के लिए नहीं बल्कि पूर्ण वर्ष तक लागू करनी चाहिए और शिक्षकों का निरिक्षण भी समय समय पर करना चाहिए । मिशन–विद्या सिर्फ और सिर्फ कक्षा १ से ५ तक के विद्यार्थियों पे लागू करनी चाहिए और यदि फिर भी परिणाम हकारात्मक न आये तो उन विद्यार्थियों

को कक्षा १ से ५ तक रोक कर रखने का नियम निर्धारित करना चाहिए । यदि ऊपर की कक्षा ६ से ८ में मिशन–विद्या जैसे प्रोजेक्ट को लागू किया जाए तो तेजस्वी विद्यार्थियों को बहोत नुक्सान होगा और समय की बर्बादी भी होगी स साथ ही ऊपर की कक्षा के शिक्षकों के पास वह कौशल नहीं होगा जो कक्षा १ से ५ के शिक्षकों के पास है ।

हर लक्ष्य के लिए सही दिशा में किया गया कार्य और प्रयास निसंदेह ही श्रेष्ठ परिणाम दे सकता है । मिशन–विद्या भी कक्षा ६ से ८ तक के विद्यार्थियों के लिए संजीवनी की तरह कार्य करेगा स लेकिन यदि यह मिशन कक्षा १ से ५ के लिए लागू नहीं किया गया तो बार बार और हर बार यह मिशन करने के पश्चात भी निश्चित उचित परिणाम बार बार नहीं मिल सकेगा । साथ में कक्षा १ से ५ तक के शिक्षक भी अपने कार्य को निष्ठांपूर्वक नहीं करेंगे और यह सोच निर्मित होगी की १ से ५ तक विद्यार्थियों को महेनत से नहीं पढ़ाएंगे तो भी कक्षा ६ से ८ में मिशन–विद्या के जरिये सिख लेंगे । इससे कक्षा १से ५ और ६ से ८ के शिक्षकों के प्रति भविष्य में संघर्ष उत्पन्न होने की सम्भावना भी बढ़ जाएगी ।

प्रायमरी शिक्षा के लिए बनाये जाने वाले हर लक्ष्य को लागू करने से पहले उनका छोटे समूह पर प्रयोग करके मूल्यांकन करने के बाद ही पुरे समूह पर लागु करना चाहिए । साथ में शहरी और ग्राम्य विस्तार के सरकारी स्कूल के लिए योजनाओ और लक्ष्यों का निर्माण करते हुए विद्यार्थियों की और उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि और विस्तार को ध्यान में रखना चाहिए स मिशन–विद्या एक बहोत ही अच्छा कार्यक्रम है और इसकी सफलता के लिए हम सभी हकारत्मक अभिगम रखते है ।

सन्दर्भ :

(1)www.udayindia.com (15, April-2017)

(2) http://gujarat-education.gov.in/ssa/

(3) https://www.moneycontrol.com/news/india/gujarat-launches-mission-vidya-to-help-weak-students-of-class-6-8-2774461.html

**** Corresponding Author:***
डॉ. नरेंद्रकुमार पाल
(सहायक शिक्षक, भरकुंडा प्रायमरी स्कूल, कठलाल, खेड़ा)
Email - drnavinsir@yahoo.in, 9924181920